आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 09/03/2026; Accepted: 20/03/2026; Published: 28/03/2026

पुस्तक समीक्षा

कन्नड़ की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती सहना कांतबैलु के स्यभ लेख संग्रह 'आने साकलू होरटवलू' अर्थात 'हाथी पालने चली'

डॉ. सुजाता फातरपेकर

असोसिएट प्रोफेसर,

एम. एम. तथा विज्ञान महाविद्यालय

सिरसी, कर्नाटक

9663576235

शोध ग्रंथ (कन्नड़) :- आने साकलु होरटवलु

स्तंभ लेख संग्रह :- श्रीमती सहाना कांत बैलु

हाथी पालने जो चली - डॉ एन. देवराज (हिंदी अनुवाद)

डॉ. सुजाता फातरपेकर, कन्नड़ की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती सहना कांतबैलु के स्यभ लेख संग्रह 'आने साकलू होरटवलू' अर्थात 'हाथी पालने चली', आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(137-139)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19500764

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

दक्षिण भारत में कन्नड़ के कई साहित्यकार लेख, कहानी स्तंभ लेखन के माध्यम से ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। श्रीमती सहना कांतबैलु के स्वतंत्र लेखन संग्रह है। 'हाथी पालने चली' अर्थात कन्नड़ में 'आने साकलू होरटवलू'

रोचक अनुभव से भरा है। इसमें 26 आलेख हैं, जो मलेनाडु पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश की संस्कृति का एक जीता जागता चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। इसमें पर्यावरण के प्रति लेखिका की संवेदना देखते ही बनती है। 'आने साकलू होरटवलू' मैं सहना जी ने जो भी जिया है, अनुभव किया है, उसी को विषय वस्तु बनाया है । 'चूल्हा बदल सकता है लेकिन आग नहीं', उसने फिर कभी लिखने का साहस नहीं किया । बछड़े का विदाई प्रसंग, बारिश, हाडी का स्नान, यह नाराजगी ठीक है क्या आदि लेख सजीव लगते हैं।

सहना जी की कृति की विषय वस्तु ग्रामीण संस्कृति एवं पद्धति पर आधारित है। इस कृति में बहुत सारे ग्रामीण शब्द मिलते हैं। पाठक यह किताब पढ़ेंगे तो इसमें निहित मानवीय तथा जीवन मूल्यों से परिचित होंगे। यह कर्नाटक के आँचलिक ग्रामीण, ग्रामीण जीवन शैली का उदाहरण है जो ग्रामीण जीवन से विलुप्त होने की कगार पर है। सहनाजी के इस जीवन पद्धति को नव जागृत किया है।

सहनाजी खूबसूरत अंदाज में मलेनाड की मेहनत करने वाली महिला, किसानों का प्रतिनिधित्व करती है। किसी प्रकार के अहंकार के बिना उन्होंने यह लेख लिखा है। उन्होंने दैनिक जीवन के अनुभव को ग्रामीण शब्दों द्वारा प्रस्तुत किया है। इसमें स्पष्ट होता है कि मानव जाति और धरती माता से प्रेम करने का एक दृष्टिकोण सहनाजी में है। इसमें दया, प्रेम , खानपान, शहरी जीवन , माता-पिता , बेटी-बेटा सबको एकीकृत करने वाली एकैक महिला है सहना कांतबैलु। अत्यंत सरल और स्वाभाविक रूप से लिखने की कला सहना में है। यह पढ़ने में बहुत मजा आता है। पढ़ते-पढ़ते आंखें धुंधली हो जाती हैं।

मड़ीकेरी के छोटे से गांव जो हरे-भरे सुपारी के बैग और नारियल के पेड़, आसपास ना कोई घर ना ही लोग घूमते हैं, ऐसे निर्जन गांव में रहने वाली सहना जी खुली आंखों से दुनिया देखती है, गांव के प्रति लगाव रखती है। कटहल , सुपारी किसानों के काम पत्र , पालक तंबोली, पशुपालन , गाय के बछड़े, मधुमक्खी पालन आदि हमारे लिए नया नहीं है लेकिन उसने इन सभी विषयों पर सीमित शैली में लिखा है जो पढ़ते समय लगता है कि यह सभी विचार नए प्रतीत होते हैं। सहना जी ने आसपास की जीवन शैली की व्यस्तता को ही अपने तरीके से प्रस्तुत किया है पूर्ण ग्राम कटहल से जुड़ा रिश्ता कहां गए किसान? किसान को कौन लड़की देता है? महानगर मुंबई में गाय पालन आदि शीर्षक पाठकों को खेत के बीच खड़ा कर देते हैं। सहनाजी ने जो भी अनुभव किया है उसे बिना संकोच पाठकों के समक्ष पेश किया है।

आज हमारी नई पीढ़ी इन ग्रामीण परंपराओं से अनभिज्ञ है परंतु इस पुस्तक के माध्यम से कर्नाटक के ग्रामीण जीवन से सभी अवगत होंगे। इस पुस्तक को पढ़ते हुए ऐसा अनुभव होता है कि हम गाय के बछड़े के साथ , हाथी के चारे की व्यवस्था, केले के पत्ते पर भोजन , गाय का दूध दोह रहे हैं। जंगली सब्जी के सेवन से कितना लाभ है, यह आज विज्ञान बता रहा है। अमेरिका जैसे महान देश के लोग सभ्यता को अपना रहे हैं, जो कभी ग्रामीण क्षेत्र की परंपरा रही है। यह सारे स्तंभ लेख कर्नाटक की ग्रामीण परंपरा को पूरे देश में अपने पहुंचने के साधन होगी । ग्रामीण, शहरी जीवन शैली से युक्त यह पुस्तक देश के कोने-कोने तक पहुंचाने का स्रोत है।

लेखिका सहना कांत बैलु द्वारा कन्नड़ में संजोये रोचक अनुभव को अपनी भाषा शैली में प्रस्तुत किया है। बछड़े के त्याग का भावुक और संवेदनशील संस्मरण, अमेरिका में पुस्तकालय की उपस्थिति की महत्वपूर्ण जानकारी, अमेरिका के समाज के प्रति हमारी धारणा बदलते लेख, विवाह के बाद ग्रामीण महिलाओं की रचनात्मक प्रतिभा के दमन, विवाह के बाद पति के सहयोग से रचनात्मक प्रतिभा के दमन , कई बार विवाह के बाद पति के सहयोग से लेखन संगीत की प्रतिभा के विकास के अनुभव से जुड़े रोचक लेखन इस पुस्तक के परिचायक हैं ।

सहना कांतबैलु शब्दों और प्रकृति को फिर आने वाला एक सुनहरा धारा है। सहना ने फसलों और आकर्षक कथाओं दोनों के लिए उपजाऊ जमीन पाई है । सहना के निबंध ऐसे समय में आए हैं जब हम सभी को पर्यावरण संरक्षण के बारे में आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है। उनकी इस कृति में मिट्टी की गंध आती है।

एक क्षेत्रीय भाषा कन्नड़ में लिखित इस प्रकार के महत्वपूर्ण विचार जब तक मुख्य धारा की राष्ट्रीय स्तर की भाषा में लाया जाता है तो वह मौलिक कार्य भी मौलिक लेखन के जितना ही महत्वपूर्ण होता है उतनी ही सराहनीय भी है। सहाना जी के विचार चिंतन एवं पीड़ा पूरे देश की पीड़ा है वह बिना रात जमानत पाते हुए अंतरंग की मार्मिक रचनाएं लिखी है पूर्ण ग्राम सभी रचनाएं जीवन के प्रति उनके प्रेम का प्रमाण है। गांव के एक लड़की जिसने अपने घर के सारे कामकाज संभालते हुए लोक अनुभव प्राप्त किया है पूर्ण ग्राम यह पाठकों का मन छुट्टी है। यह लेख हृदय में जीवन के प्रति आजाद प्रेम जागते हैं। कुछ रचनाएं पर्यावरण के साथ संवेदनशील संबंध को निरूपित करती है।

****